ISSN 2278-8808
An International Peer Reviewed
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

अज्ञेय के शेखर की मनः स्थिति और व्यक्ति प्रासंगिकता

नीतू गोस्वामी

शोधार्थी

निर्मला ढैला बोरा, Ph. D.

निर्देशिका, डी. एस. बी. कॅम्पस नैनीताल.

कला कृति में साहित्यकार की अनुभूति का प्राधान्य होता है, पर उसका (अनुभूति का) उसके द्वारा हष्ट और भक्त होना अनिवार्य नहीं होता। वह श्रुत-अश्रुत सभी वस्तुओं को कल्पना की आँखों से देख सकता है। इस तरह साहित्य उसके अचेतन से उत्थित होता है, वह अनायास ही रचना प्रक्रिया के वशीभूत हो जाता है। मानव-मन मनोविज्ञान का शुद्ध विश्लेषण है। यही मन मनोवेगों, भावों, विचारों, मनोविकारों का स्त्रोत तथा अनुभूतियों का एक कोश कहा जा सकता है। ''साहित्य इन्हीं मनोविकारों और अनुभूतियों की रोचक कथा है।'' (१) साहित्य की सर्जन-प्रक्रिया यद्यपि एक शुद्ध मानसिक व्यापार है, पर इस संश्लिष्ट-प्रक्रिया के विश्लेषण में मनोविज्ञान अब तक समर्थ नहीं हो सका है। मनोवैज्ञानिक युग का तो इस विषय में स्पष्ट मत है-''सर्जनात्मक प्रक्रिया जो केवल प्रतिक्रिया से मूलतः भिन्न है मानव बुद्धि की पकड़ में कभी नहीं आ सकेगी उसके आविर्भाव की धूमिल अनुभूति तो ग्रहण की जा सकती है, पर उसे पूर्ण रूप से नहीं समझा जा सकता।'' (२) जहाँ तक उपन्यास मानव मन की गहराईयों में प्रविष्ट होता है, उसका मनोवैज्ञानिक रूप श्लाध्य है और वांछित भी पर जहाँ वह गिने-चुने मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रतिफलन मात्र देखता है, या केस-हिस्ट्रियाँ तैयार करने में अपने कर्तव्य की इतिश्री समझता है, सराही नही जा सकती। उस स्थिति में वह न व्यष्टि या समष्टि के लिए हितकर हो सकती है वही उसमें उपन्यास और उसके पात्रों में निखार आ सकता है।

'शेखर एक जीवनी' अज्ञेय का पहला उपन्यास है जो कि अजनबीपन का एक सुन्दर उदाहरण है। इसकी कथावस्तु आज भी अपनी प्रासंगिकता रखती है। अपने विद्रोहात्मक मुद्रा, नयेपन के कारण यह उपन्यास काफी प्रसिद्ध हुआ। इसमें मानव-मन का नये ढंग से मनोवैाानिक विश्लेषण किया गया है। यह

एक व्यक्ति केन्द्रित उपन्यास है। इसका कथानायक शेखर है। और उसी के चारों तरफ सारी घटनाएँ घूमती रहती हैं। शेखर एक जीवनी मृत्यु की छाया में स्थित तक प्राणवान व्यक्ति की विशन है। उस व्यक्ति के लिए अपने जीवन का आन-संस्मरणात्मक आख्यान है। अतीत की स्मृतियॉ उसके मानस पटल पर आ जाती है। ''मृत्यु की सम्मोहिनी शक्ति ने शेखर के अतीत की विशेषता बाल्यकालीन स्मृतियों को उभार कर सामने रख दिया है।''(३) उपन्यास के पहले भाग में शेखर और किशोरावस्था का अत्यन्त सूक्ष्म मनोविश्लेषण किया गया है। दूसरे भाग में युवक शेखर के विद्रोही व्यक्तित्व को उभारा गया है। शेखर का मुख्य स्वर व्यक्तिवादी है।

आज का मनोविज्ञान आदमी के बाल्यकाल को बहुत अधिक प्रधानता देता है। व्यक्ति का प्रौढ़काल उसके बाल्यकाल की संस्कारगत नींव पर अवलंबित है। अज्ञेय ने उपन्यास में बाल मानोविज्ञान का अध्ययन पेश करते हुए अपने समय की महत्ता को स्वीकार किया है। शिशु के मन में जो सहज संवेदनाएं होती है, नयी वस्तुओं और घटनाओं के प्रति जो जिज्ञासाएं होती हैं- जैसे बहिन का जन्म, माता-पिता के यौन प्रणय व्यापार सम्बन्धी जो जिज्ञासाएं होती हैं, शेखर में इन सूक्ष्म भाव बिन्दुओं का आवर्तन दिखाई पड़ता है। इस विषय का विवेचन करते हुए डॉ० देवराज उपाध्याय लिखते हैं-''मालूम तो ऐसा होता है कि बाल मनोविज्ञान और चितविश्लेषण वादी मनोविज्ञान को कथात्मक और सृजनात्मक रूप देने के प्रत्यत्न में ही शेखर का निर्माण हुआ है।''(४) प्रस्तुत उपन्यास का अनुसंधान करने पर यह बात विदित हो जाती है कि व्यक्ति के चरित्र-विकास के लिए लेखक ने मनोविज्ञान का सहारा लिया है। शेखर चरित्र प्रधान कृति है। इसी कारण से यह एक व्यक्तिवादी उपन्यास अवश्य है। शेखर समग्रात्मक रूप में एक संश्लिष्ट चरित्र है। यह टाइप न होकर खासा व्यक्ति है। वह समाज की रूढ़ियों के खिलाफ चलता है। वह सहज प्रेरणाओं के बल पर अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। नैतिक रूढ़ियों को तोड़ता है। बाल्यकाल से लेकर उसकी वैयक्तिक जिज्ञासाएं और विद्रोह भावना दबायी जाती हैं यह दमन बाद में मानसिक ग्रन्थियों में परिणत हो जाता है। शेखर उन ग्रन्थियों के कारण कुंठित हो जाता है। वह व्यक्तित्व सम्पन्न है। अतः सामाजिक मान्यताओं को आँखें मूंदकर मानने को तैयार नहीं। उसमें सत्य को व्यक्तिनिष्ठ रूप में खोजने की लालसा और तड़प है। वह परम्परा तथा रूढ़ियों को तोड़ने वाला है। अतः उसके मन में सवाल निरन्तर उठते रहते हैं अस्तित्व सम्बन्धी, प्रणय सम्बन्धी तथा ईश्वर सम्बन्धी सवाल चिह्न यहाँ मनोवैज्ञानिक स्वरूप में प्रस्तुत हुए हैं।

शेखर का मूल्यांकन करने पर यह बात स्पष्ट होती है कि वह एक घोर व्यक्तिवादी तथा अहंवादी पात्र है। उसमें नैतिक और सामाजिक बोध का अभाव है। शेखर सर्वदा एक व्यक्ति है। वस्तुतः उसकी

वैयक्तिक चेतना में व्यक्ति मन की चेतना अन्तर्भूत है। इस व्यक्ति के लिए स्वयं अज्ञेय ने लिखा है-' शेखर कोई बड़ा आदमी नहीं, अच्छा आदमी भी नहीं, लेकिन वह मानवता के संचित अनुभव के प्रकारों में ईमानदारी से अपने को पहचानने की कोशिश कर रहा है। वह अच्छा संगी नहीं भी हो सकता है, लेकिन उसके अन्त तक उसके साथ चलकर आपके उसके प्रति प्रभाव कठोर नहीं होंगे, ऐसा मुझे विश्वास है और कौन आज के युग में जब आप हम सब संश्लिष्ट चरित्र है, तब आप पायें कि आपके भीतर भी कहीं पर एक शेखर है जो बड़ा नहीं, लेकिन जागरूक और स्वतंत्र और ईमानदार है घोर ईमानदार।'' (५) शेखर एक जीवन में अजनबीपन का प्रत्यय अपने पारिवारिक परिवेश में मिलना थोड़ा कठिन है। पर रोमांटिक आउट साइडर की ओर देखने से यह अजनबीपन मनोवैज्ञानिकता के साथ काफी मात्रा में उपलब्ध है। उसके मानस में कल्पना निर्मित खलिल संसार बसा हुआ है। जिसको वास्तविक जगत में मूर्तिमान देखने के लिए वह आजीवन संर्घषरत रहा है। आजीवन न लौटने का निश्चय करके घर से निकला शेखर उस समय स्वप्न देखता है जब किसी को भी किसी प्रकार का अत्याचार नहीं सहना पड़ेगा, चाहे घर में, चाहे बाहर रास्ते में आये जल प्रपात को देखकर सोचता है-'जीवन ऐसा होना चाहिए, शुभ्र, स्वच्छ, संगीत पूर्व, अरूद्ध, निरन्तर सचेष्ट और प्रगतिशील। घर-बार के बन्धनों से मुक्त और सदा विद्रोही।'(६) ये विचार उसके रोमांटिक आउट साइडर के रूप में बड़ी अच्छी तरह प्रकट करते हैं।

शेखर एक जीवनी में व्यक्ति का अकेलापन अपने विद्रोही रूप में ज्यादा प्रकट हुआ है। भावनाओं को निरन्तर भोगनेवाला शेखर नियति के सम्मुख अपने को अकेला अनुभव करता है। सच कहें तो भावनाओं को बराबर झेलना ही उसकी वास्तविक नियति है। आज हम सब लोगों की मानसिकता शेखर जैसी ही है। परन्तु हम उसे जाहिर नहीं कर पा रहे हैं। व्यक्ति का अकेलापन वास्तविक पीड़ा को जन्म देता है। अज्ञेय मूलतः कवि है तथा उनका कवि हृदय आर्द्र संवेदनाओं से अभिभूत है। अतः आज के व्यक्ति की वेदना को एक मूल तत्व के रूप में इस उपन्यास में उभारा है। शेखर की रचना-प्रक्रिया के आधार में उन्होने व्यक्ति की वेदना का ही प्रयोग किया है। यह एक हिन्दी की अमूल्य तथा कालजयी रचना है। इसका गठन घनीभूत वेदना को केवल एक रात में देखे गये विशन (अपेपवद) को शब्द बद्ध करने का प्रयास किया गया है। (७) हुआ है। श्रीनगर के परीमहल के खण्डहरों में पहुँचकर उसे सौन्दर्य की दिव्य अनुभूति होती है जो अपने चरित्र में वस्तुतः रोमानी है- लेकिन जो बहुत सुन्दर है, बहुत भव्य, बहुत विशाल, बहुत पवित्र- इतना पवित्र कि शेखर को लगा वह उसके स्पर्श के योग्य नहीं है। वह मैला है, मल में आवृत्त है, छिपा हुआ है....।'' (८) वह दिव्यस्वप्नों के कुदासे में भटकता हुआ अपने त्राता की खोज करता रहता है। उसे

लगता है जो जीवन वह भी जी रहा है, वह बाधा के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। (९) इसी में मौका पाते ही अपने बगीचे से केले के तनों को काटकर उस पर लेखक, गंगा की धारा में बहते हुए उस सोने के टापू पर जाने का प्रयास करता है, वहाँ बादलों से बने हुए सूत के वस्त्र पहनने वाली राजकन्या रहती है। अपने जीवन के शून्य को भरने के लिए वह सोचता हैं कि ''क्यों नहीं कोई ऐसी घटना होती जिससे वह टापू कहीं निकट आ जाये इतना भी न सही, क्यों नहीं जब वह राह चलता होकर खाता है तब कोई इसी संसार की लड़की उसके पास जाकर स्नेह से उससे कहती 'आओं शेखर मैं और कुछ नहीं कर सकती पर तुम्हारे इस एकरस जीवन में कुछ नयापन ला सकती हूँ।' (१०) में स्थल शेखर की रोमानियत और काल्पनिक दुनिया के विचरण पर मनोवैज्ञानिक प्रकाश डालते हैं।

शेखर मुख्य रूप से तीन सहज प्रेरणाओं से संचालित है- अहं, भय, और यौन (सैक्स)। ये प्रेरणाएं नैसर्गिक तथा जन्मजात हैं। इन तीन प्रेरणाओं के परिपेक्ष्य में शेखर के व्यक्तिवादी जीवन स्वरूप को आंका जा सकता है। उसका अहं बचपन से ही प्रबल दिखाई पड़ता है। दूसरी सहज प्रेरणा जो जीवन को संचालित करती है। भय उसका साक्षात्कार तब पहली बार होता है जब वह अजायबघर में फिरते हुए नकली बाघ को देखकर भाग खड़ा होता है। तीसरी स्मृति उसमें निहित प्रबल यौन भावना की है। मध्यवर्गीय परिवार में चूंकि यौन चर्चा वर्जित और निषिद्ध है, इसलिए उनका मौन भाव कुंठित और दमित हो जाता है। मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर शेखर की इस मानसिाक वृति को दिखाया गया है। बाद में उसका यौनभाव उसके अहंभाव का अंग बनकर रह जाता है। शेखर के यौनभाव का विकास तीन बिन्दुओं पर दिखाई पड़ता है- (१) आत्मरति (२) समलिंगी रति (३) विपरीतलिंगी रति। अगर हम दूसरी तरफ नजर डालें तो शेखर के व्यक्तित्व में विकास के तीन अन्य बिन्दु भी दिखाई पड़ते हैं- प्रेम, घृणा और वासना। यह अपनी माँ के द्वारा उपेक्षित मात्र है। इसे स्नेह न देकर बार-बार डाँट फटकार और अविश्वास ही परिवार से मिलता है। यहाँ माँ के प्रति विमुखता तथा घृणा का भाव देखने को मिलता हैं। शेखर में हम अपना प्रतिबिम्ब देख सकते है। शेखर सामान्य व्यक्ति से ऊपर और बिलकुल विशिष्ट दिखाई पड़ता है और निरन्तर विशिष्टता की ओर प्रभाव करता भी दिखाई देता है।

अज्ञेय जी प्रेम और वासना को जीवन के दो निर्णायक तत्व मानते हैं ये तत्व व्यक्ति के विकास में सहायक अवश्य है। अपनी जीवन यात्रा में शेखर इनका प्रयोग करते हैं पाथेय के रूप में। सैक्स के सम्बन्ध में लेखक का दृष्टिकोण आधुनिकता निकरा बोध को निवृत करने वाला है। सैक्स को ये निरे शरीर सम्बन्धी नहीं मानते और न केवल स्वभाविक बन्धन के स्वरूप में उसको बांधने के लिए तैयार हैं। बल्कि इसे एक

गतिशील संपृक्त भाव के रूप में इसे अज्ञेय ने माना है। शेखर इस विषय के बारे में ठीक ही अनुभव करता है कि वह प्यार माँगता ही रहा है। प्यार देना उसने जाना ही नहीं। जीवन मार्ग पर बढते-बढ़ते उसने अपनी इसी वृत्ति के कारण लक्ष्यहीनता का अनुभव किया है, ''क्या जीवन की अबाघ गति ही मुझे लहर पर के उतराते हुए टीन के खाली डिब्बे की तरह इधर-उधर नहीं पटकती रही- कहीं पत्थर से टकरा गया तो 'खन्न' से गूँज उठा पर वह गूँज पाँवों के विद्रोह की थोड़े ही थी वह केवल आन्तरिक शून्य की खोखल में भरी हुई वायु की ही थी।' ज्यों-ज्यों यह तथ्य उस पर उजागर होता जाता है वह बेबस-सा होकर अपने आप को पागल कह उठता है। शशि उसे पागल नहीं 'बहुत बड़ा बच्चा, कहती है। वास्तव में शेखर के भीतर एक अकृत्रिम ही बैग बच्चा है, जो दुलार से कोई दिशा चाहता हे। शेखर जीवन को निरापद बनाने की चिन्ता नहीं करता। निशापद होने की चिन्ता वह करे जो सुरक्षा चाहता हो। जोखिम उसे आवाहन देता जान पड़ता है। इसीलिए वह अनुभव करता है मुझे तो समाज के बीच में जीना ही कठिन मालूम होता है-''उतना ही कठिन जितना डिब्बे के बैंकुअम मे। अकेले रहना तो बहुत आसान है-रहे सो रहते चले गए।'' यहां भौतिकवादी अकेलेपन की मानसिकता को बड़े ही साफ और सटीक शब्दों में लेखक ने व्यक्त किया है।

शेखर के जीवन का जो सरस पक्ष है वह शशि को लेकर है। उसे निजत्व की पहचान शशि के निकट मिलती है। पहले पश्चिम में बालक शेखर स्वयं चार वर्ष का है और शशि तीन की। शशि का परिचय उसे दूर की बहन के नाते दिया जाता है। शेखर उस लादे हुए सम्बन्ध को तुरंत मनही मन अस्वीकार कर देता है। उसका उद्धत अहं दूसरे को निकट नहीं देखना चाहता। शशि को उसके साथ नहाने को छोड़ा जाता है तो शेखर लोटा अपना कहकर छीनना चाहता है और फलस्वरूप शशि के माथे पर लोटा मार बैठता हैं शशि में अपने ढंग की सहनशीलता और समर्पण का भाव है। वह शेखर का दोष छिपा लेती है। भोजन करते समय शेखर शशि से बोलता नहीं पर चुपचाप अपने लोटे में पानी भरकर शशि की थाली के पास रख देता है। ''जब शशि के बिना उसकी ओर देखे ही लोटा उठाकर उसमें से पानी ली लिया तब शेखर को लगा उसने संसार के सब लोटों से बढ़कर एक चीज पा ली है।'' यह सन्दर्भ शेखर तथा शशि के मनोविज्ञान और पारस्पारिक सम्बन्ध को समझने में एक कुंजी की तरह काम करता है।

युवावस्था में शेखर को शशि का जब तब सामीप्य मिलता है और वे परस्पर आत्मीयता का अनुभव करते हैं। शशि के विवाह के समय शेखर जेल में होता है। शशि उससे पत्र द्वारा मार्गनिर्देश चाहती है। शेखर उसे विवाह की स्वीकृति लिख भेजता है, क्योंकि शेखर को स्वयं अपनी इच्छा या उद्देश्य का पता

नहीं। जेल से छूटने पर शेखर शशि के प्रति के घर जा पहुँचता है। पति परमेश्वर साधारण व्यक्ति है। उन्मत शशि ने उसे अपना रखा है। अब मानो इस नयी स्थिति में अचेतन रूप में दोनों शेखर और शशि-शशि के घर के टूटने और परस्पर निकट आने की तैयारी करते हैं। शशि मन-ही मन शेखर के प्रति आकृष्ट हो रही है किन्तु परिस्थितिवश उसे अन्यत्र विवाह करना पड़ा। वैवाहिक दायित्व का वह निर्वाह कर रही है, किन्तु मन की मांग प्रबल हो उठी है। वह शेखर को साधारण विवाहिता की भाँति नकार नहीं पाती वरन् उत्कृष्ट आत्मीयता देती है। दूसरी ओर शेखर का मनोविज्ञान उसके मूल स्वभाव के अनुरूप विकसित हुआ है। पहले शशि के प्रति उसमें आकर्षण था पर आग्रह नहीं। शशि का विवाह हो जाना उसे कुछ अनोखा नहीं लगा। जेल से लौटने पर उसे शशि पराई पत्नी के रूप में दिखाई पड़ती है। यह वर्जित कल जिसे चखना तो दूर देखना भी समाज की ओर से निषिद्ध था। यह निषेध ऐसी वर्जना विद्रोही शेखर को सहज नहीं रहने देती हे। वह इन्हें ललकारता है। प्रति रामेश्वर के सन्देह तथा बर्वरता के कारण शशि का घर टूट जाता है। शशि का अर्न्तद्वन्द्व स्वाभाविक है। पति का घर उसे रास नहीं आता है। शेखर का एकांत उसकी अपनी नियति है। वह सहज रूप में विकसित हुई दीन ग्रन्थी का शिकार हुआ भाग का व्यक्ति है। शशि अपने तथा शेखर के सम्बन्ध को बड़ी गहराई तथा मार्मिकता से व्यक्त करती है। क्योंकि अब उसके पास देने को कुछ भी नहीं है। ''शेखर, तुम मुझे बहिन, माँ, भाई, बेटा कुछ मत समझो क्योंकि मैं - अब कुछ नहीं हूँ। एक छाया हूँ। और अमूर्त होकर मैं तुम्हारा अपना आप हूँ जिसे तुम नाम नहीं दोगे।'' यहाँ शशि और शेखर का सम्बन्ध वर्जित सम्बन्धों के सन्दर्भ में सामने आया है। हमारे मध्यवर्गीय परिवारों में ये सम्बन्ध प्रायः देखे जा सकते है। ऐसे पात्रों का मनोविज्ञान अन्य सहज पात्रों से कुछ अलग ही होता है।

दरअसल शेखर एक ऐसा सामाजिक पात्र है जो अपने सवालों का जवाब चाहता है। उसके जीवन में अपनी कुछ सामान्य स्थितियॉं, खासकर कल्पना की दुनिया में विचरण, सौन्दर्य की खोज, सत्य के लिए दृढ़ चाह उसे इस दुनिया से अलग कर देती है। ईश्वर, समाज, परिवार, संसार, वर्तमान व्यवस्था किसी से भी उसका तादात्म्या नहीं हो पाता। शेखर का यह विद्रोहीपन आउट साइडनेस का एक पहलू है। बचपन से ही उसकी तर्कशीलता ईश्वर के प्रति अविश्वासी बना देती है। कभी जब माँ कहती कि ' बेटा, घबराओं नहीं, ईश्वर सब अच्छा करेंगे तब वह चाहता है कि पार पड़े,बरस पड़े पूछे कि -'क्या युद्ध अच्छा हुआ है? भूख अच्छी हुई? इतने लोग बीमार पड़े, अच्छा हुआ? लोग मरे अच्छा हुआ है'' (११) सब कुछ ईश्वर करता है- इसमें उसे आपत्ति नहीं है। पर वह सब कुछ अच्छा करता है, यह झूठ है, उस पर अत्याचार है, इसे वह किसी तरह नहीं सह सकता। इसी से कभी उसका छोटा-सा व्यक्तित्व अपना सारा साहस एकत्र

करके पूछ बैठता है 'कहीं रोया तो नहीं है कि ईश्वर है ही नहीं? अपने पिता से वह कह भी बैठता है कि ईश्वर झूठा है, ईश्वर है ही नहीं? अपने पिता के सामने एक बालक का विद्रोही मन प्रकट करने का उद्देश्य भी लेखक का यही है कि आज सभी बालक प्रायः शेखर की तरह कई वर्जित सवाल पूछते हैं लेकिन हम उनकी जिज्ञसु प्रवृति को शांत न करके उन्हें कुंठित कर देते हैं वस्तुतः उसके लिए ईश्वर सब से बड़ा झूठा, छलिया और मक्कार है।

शेखर की यह अतिरिक्त तर्कशीलता और बैद्धिकता तथा अपने कमवयस्कों से उसकी असाधारणता जगह-जगह स्वयं उभर आती है। अपनी प्रखर मेघा शक्ति और तीव्र बैद्धिकता के कारण शेखर एक असामान्य बालक-सा हो जाता है परन्तु शशि का आत्म बलिदान उसे कुछ हद तक अजनबीपन या अकेलेपन से बचाता रहता हे। अधूरा होते हुए भी वह सम्पर्णता महसूस करता है। और दुनिया उसके लिए निरर्थक होते-होते बच जाती है अब मैं अधूरा हूँ पर मुझमे कुछ भी न्यूवता नहीं है, अपूर्ण हूँ पर मेरी सम्पूर्णता के लिए कुछ भी जोड़ने को स्थान नहीं है।'' (१२) अजनबी आदमी की तरह शेखर संसार के सँड़ाध और विभ्रमों का अनुभव करता है।- ''सर्वत्र कतुष है, ह्रास है, पतन है- एक अकेला समाज ही नहीं, जीवन आमूल दूषित है- ईश्वर, मानव, सब कुछ-अमल दूषित -दूषित और सड़ा हुआ है। (१३)

शेखर के लिए जीवन अर्थहीन होकर भी अर्थहीन नहीं होता। शशि के आत्म बलिदान से उसमें एक प्रकार के आत्म बल का उदय होता है जो उसे इस दुनिया से अजनबी होने से जबर्दस्ती रोके रहता है। इसी से वह मुत्यु को भी चुनौती देता हुआ ललकारता है- ''मृत्यु, तू भी तो छाया है- ग्रस ले इस आत्मा को यदि शक्ति है तुझमें यदि साहस है....। जीवन में शेखर नर-नारी दोनों के प्रति आकर्षित होता है। यहाँ यह तो प्रकट करना कठिन है कि वह समलैंगिक है या विपरीत लिंगी। लेकिन उसी काम वासना दोनों लिंगों के प्रति कुंठित स्वरूप में पेश हुई है। शेखर किसी को मन से स्वीकार करने में उस पर अपना पूर्ण अधिकार चाहता है कॉलेज में कुमार उसका घनिष्ठ मित्र बन जाता है। वह कुमार से ऐसे ही कह बैठता है- ''कुमार, यदि मेरे अतिरिक्त तुम और किसी के हुए तो मैं तुम्हारा गला घोट दूँगा।'' यहाँ शेखर अपनी किसी इच्छित वस्तु को छोड़ना नहीं चाहता वह केवल उसे अपना बना लेना चाहता है। लेकिन वास्तव में ऐसा होता है। शेखर में उद्धत अहं है। अहं का मोटे तौर पर अर्थ है अपने आपको पहचानना। इस पहचान में व्यक्ति, पर अपना दूसरों के अलगाव को पहचानता रहता है। अलगाव के भीतर से कहीं एकता को पाने की इच्छा भी उसमें रहती है। यह बात शेखर में है, किन्तु उसका अपना तरीका है। वह दूसरों को स्वीकार नहीं करता और न हीं कर सकता है। दूसरे लोग ही उसे स्वीकारें। उसका प्रबल अहं

प्रचलित सामाजिक व्यवस्था में सर्वत्र विद्रोह का रूप धारण करता है। उससे जो कुछ भी होता है उसका कारण उसी का स्वभाव है। किसी गहरी समाज का या ईश्वर का उसमें कोई योगदान नहीं है।

एक बालक तथा किशोरपन की मनः स्थिति को उचित परिवेशन मिलने के कारण कुंठित होते हुए समग्र जीवन का दिग्दर्शन इस उपन्यास में प्राप्त होता है। मानव जीवन का जिस तरह मनोविज्ञान के भावार्थ स्वरूप में अज्ञेय जी ने चित्रण किया है वह अन्यत्र दुर्लभ हैं। शेखर अहमी है, वह उन्मुक्त स्वच्छदंता पसंद करता है और धीर-धीरे अन्तर्मुखी बनता चला जाता है। शेखर का मनोविज्ञान उसके स्वप्नों के साथ भी उभरता चला जाता है। शेखर के स्वप्न उसकी आन्तरिक, गूढ और उससे हुए मन की भावनाओं को व्यक्त करते है। उसके जीवन में अहम भय तथा सैक्स का महत्वपूर्ण स्थान है। बालक शेखर के स्वप्न का विवेचन करते हुए हम कह सकते है कि - शेखर के अधिकांश स्वप्न पिछले दिन के अनुभव पर मन की प्रतिक्रिया जताते हैं। विपर्यास कह होने से इनमें व्यक्त और प्रकट विचार में अधिक भिन्नता नहीं होती। इनके कारण मानसिक उद्धीपन बालक की गहरी नींद में बाधा डालते हैं। ''और देखते-देखते एक दिव्य शांति उसके ऊपर छा जाती है, और वह जानता है कि जिसे खोजने वह आया था, जिसके लिए वह भाग रहा था.... .और शांति इतनी मधुर है कि शेखर को रोमांच हो जाता है, वह दबाकर सरस्वती का हाथ पकड़ लेता है....।''(१५)

शेखर के जीवन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में कई प्रतीक स्वरूप भी देखने को मिलते हैं। अज्ञेय ने अपने इस नये प्रयोगात्मक उपन्यास में मानव भाव की कई गुंथियों को सुलझाने का भी कार्य किया है। स्वप्न में दर्शये गये चित्र विलेशण के प्रतीक भी इसी तरह मन को द्वन्द्व की स्थिति में ले जाते हैं। यहाँ प्रकट कुछ स्वप्न प्रतीक इस प्रकार है- विस्तीर्ण मरूस्थल -शेखर की विस्तृत आकांक्षाएं, कड़कड़ाती हुई धूप-आकांक्षाओं के बाधक तत्व (पिटाई आदि), पीछे कोई आ रहा है भय बहुत से ऊटों के पैरों से उड़ी हुई धूल-भय का विस्तार, मिट्टी की ऊंची बाड़- कठिनाईयाँ, चूहे की बिलें, आमरिस का पौधा। शेखर की स्मृति (अपने सरस्वती के फूल में आयरिस का फूल देखा था, यह स्मृति है, फूलों की शय्या-सरस्वती की स्नेहिल गोद, धनी संध्या-उदासी, सरस्वती का हाथ पकड़ना-सरस्वती के साथ रति की इच्छा, वासना की भावना पथरीला रास्ता-चोरी का मार्ग, नाल पर अकेला फूल-सरस्वती की घर से विरूद्ध शेखर के प्रति सहानुभूति आदि। फ्रांयड का इस सम्बन्ध में कहना है- '' प्रतीकात्मकता स्वप्न सिद्धान्त का सबसे विशिष्ट भाग है। जब एक पद अपना अर्थ छोड़ कर किसी अन्य पद का प्रतिनिधित्व करता है तो उसे प्रतीक कहते

हैं। अर्थत् दो तथ्य, घटनाएँ, पद पदार्थ ऐसे सन्दर्भ से जुड़े रहते है कि किसी व्यक्ति विशेष के मन में एक प्रतीक और दूसरा उसमें निहिष्ट मनोबिम्ब होता है। मनोबिम्ब मानो प्रतीक का अनुवाद ही होता है।'' (१६)

इस उपन्यास की लेखन शैली की गहन भाव-प्रवणता और भाषा सौस्ठव की दृष्टि से, आलोचकों ने इसे उत्कृष्ट गद्य रचना माना है। अंत में इसकी चित्रणशैली में मनोवैज्ञानिक कौशल जो अज्ञेय जी ने प्रस्तुत किया है, उसके विषम में भी चर्चा कर लेनी चाहिए। फॉसी चढ़ने की प्रतीक्षा में शेखर जेल की एक कोठरी में रात्रि में बैठा है। वह जीवन के अंतिम छोर पर आ पहुँचा है, यह उसे भली भांति मालूम है। इस छोर पर बैठकर वह विगत जीवन को पढ़कर उसके अर्थ लेना चाहता है। जो कुछ बीत चुका है- वह आज प्रत्यक्ष नहीं। अतीत की देन, कुछ अनुभूति-कण, अब उसकी चाहती है वह अनुभूति और उसमें निहित प्रबल पीड़ा, आज के सूने में शेखर को असहय हो उठी है। वह पीड़ा स्मृतिमय है। विगत की, विशेषकर उसकी बाल्यावस्था की स्मृतियाँ धुँधली है और कहीं-कहीं तो किसी पीड़ा की अनुभूति ने ही स्मृति का रूप धारण कर लिया है। साधारणतया पहले हम वस्तु को प्रत्यक्ष देखते हैं, वाद में उसके सम्बन्ध में सोचते समय स्मृति से काम लेते हैं और फिर उसका वर्णन करते समय कल्पना का आश्रय लेते हैं। शेखर के प्रसंग में यह स्थिति अलग प्रकार की है। बाल्यावस्था में उसने जो अनुभव किया था, वह बहुत कुछ अबोधता की भेंट चढ़ गया और जो शेष रहा, वह विस्मृति के गर्भ में लीनप्राय है। प्रत्यक्ष के नाम पर जो कुछ कभी उसके पास था, उससे अधिक अनुपात में उसकी स्मृति शेष है और स्मृति से कहीं अधिक प्रखर अब उसकी तत्सम्बन्धी कल्पना है। शेखर की कल्पना पर, आज उसकी प्रबुद्धावस्था के कड़वे मीठे अनुभवों तथा प्रस्तुत मृत्यु के क्षणों की कटुता, करूणा का सा चढ़ गया है।

निष्कर्षतः शेखर आज का अहम सामान्य व्यक्ति है। उसकी मनोवैज्ञानिक सोच हर व्यक्ति की मनःस्थिति को प्रभावित करने वाली है। प्रेम और वासना ही शेखर के व्यक्ति-मन को आन्दोलित करने वाली मूल संवेदना है इस दृष्टि से आंकने पर शेखर में एक रोमांटिक विद्रोह की भावना सामने आती है। डॉ० बलभद्र तिवारी का कहना है कि ''आत्म वैशिष्ट्य की भावना से मंडित होकर शेखर एक ऐसे वर्ग का प्रतिनिधि बनाया गया है कि वह एक ही रह गया।'' (१७) आज हमें अपने बालकों की मनःस्थिति को समझना होगा तथा उसकी जिज्ञासाओं को भी शांत करने का प्रयास करना आवश्यक है ताकि आने वाली पीढ़ी शेखर के स्वरूप में स्वंय को कुंठित न कर सकें। अज्ञेय ने शेखर के निराले व्यक्तित्व का चित्रण गहराई और मनोयोग से इसीलिए ही किया हैं परिस्थतियों में उलझते-टकराते शेखर के मन की परत डर परत खुलती जाती हैं और बच रहता है एक अहं पीडित रिक्त किन्तु शशि के अनुराग से आप्लावित हृदय

जो बरबस ही पाठकों को द्रवित कर जाता है। शेखर के जीवन दर्शन की प्रसांगिकता आम आदमी के जीवन में हमेशा बनी रही है और आगे भी बनी रहेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

साहित्य शास्त्र- डॉ० राम कुमार वर्मा पृ०-१० प्रेम प्रकाशन मंदिर दिल्ली, १९८३

हिन्दी नई कहानी मनोवैज्ञानिक अध्ययन- डॉ० मिथलेश रोहतगी-पृ० ३ शुलभ बुक हाउस, मेरठ, १९७९

आधुनिक कथा साहित्य और मनोविज्ञान- डॉ० देवराज उपाध्याय, पृ० २४६, संघी प्रकाशन, कानपुर, १९९३

वही० पृ० १६६-१६७

शेखर एक जीवनी- भाग- प्रथम- भूमिका, मयूर पेपर बोक्स, नोएडा, २००६

शेखर एक जीवनी भाग- प्रथम, पृ० ४०, अज्ञेय

शेखर एक जीवन भाग- प्रथम- पृ०- ७०- भूमिका, अज्ञेय

शेखर एक जीवन- भाग प्रथम- पृ०- ६६ अज्ञेय

वही० - १०६

वही० -१०७-१०८

वही० पृ०- ८६

वही, पृ० १६

शेखर एक जीवन- भाग द्वितीय - पृ० २४२, अज्ञेय, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, २००६

वही० पृ० २४८

वही० पृ० १४३-१४४

असामान्य मनोविज्ञान- हंसराज भाटिया, पृ०- ३१७ प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली-१९८१

आधुनिक साहित्य व्यक्तिवादी भूमिका- डॉ० बल भद्र तिवारी पृ०- ३५३, संचयन प्रकाशन, कानपुर, १९८८